वक्त का आईना

जब भी कोई खूबसूरत चीज देखने हो,
खुद को आईना मे निहार लेती हुँ।
जब भी परेशानी आती है बस,
खुद पे भरोसा कर लेती हुँ।
मै जो भी हुँ जैसे भी हुँ,
बहुत परफेक्ट हुँ खुद के लाइफ से।
बस यही बात खुद को समझ लेती हुँ,
मै खुद से रोज थोड़ा प्यार कर लेती हुँ।।

जब भी अकेला महसूस करती हुँ,
खुद के साथ थोड़ा वक्त बिता लेती हुँ।
जब भी कोई मुसीबत आती है बस,
खुद को खुद से पास कर लेती हुँ।
मै जो भी हुँ, काफी हुँ खुद के लिये,
बस यही बात खुद को समझा लेती हुँ।
मै खुद को रोज थोड़ा समझा लेती हुँ,
मै रोज खुद से थड़ा प्यार कर लेती हुँ।।

.....→.....2

जब भी कोई गलती करती हुँ,.....←.....1
खुद से माफी मांग लेती हुँ।
जब भी किसी की जरुरत होती है,
खुद को सम्भाल लेती हुँ।
मै जहां भी हुँ जिस हाल मे हुँ,
खुद के साथ तो हुँ।
बस यही बात खुद को समझा लेती हुँ,
मै खुद को रोज थोड़ा समझा लेती हुँ।
मै खुद से रोज थोड़ा प्यार कर लेती हुँ।।

खुद का एहसास साथ रखती हुँ,
खुद पे भरोसा बेहिसाब रखती हुँ।
मेरी हँसी है दवा हर गमो का मेरा,
खुद के सिवा कोई नही है सहारा मेरा।

हर रोज खुद को यही बात समझा देती हुँ,
मै खुद को रोज थोड़ा समझा लेती हुँ।
मै खुद को रोज थोड़ा प्यार कर लेती हुँ।।

लेखकः शालु प्रसाद
प्रकाशकः अमर नाथ साहु